# बाइबल टीचर

वर्ष 15 अप्रैल 2018 अंक 5

## सम्पादकीय

## मसीह की कलीसिया का प्रधान केवल यीशु है

आज बहुत से लोगों को कहते हुए सुना जाता है कि हमारी कलीसिया का प्रधान तो भाई रमेश या भाई सुरेश हैं। कई बार यह भी सुनने में आता है कि यह भाई पीटर की कलीसिया है। बहुत सारे लोगों के मन में कलीसिया के बारे में अनुचित धारणाएं भरी हुई है। परन्तु हमें यह जानना चाहिए कि मसीह की कलीसिया का प्रधान केवल प्रभु यीशु मसीह है तथा उसी की बताई हुई आज्ञाओं से इसका कार्य होता है। और उसी के नाम से यह कलीसिया जानी जाती है।

कलीसिया शब्द का अर्थ है बुलाये हुए लोग अर्थात् जिन्हें संसार से बुलाया गया है, और यह कलीसिया आत्मनिर्भर है। कोई मनुष्य इस पर अपनी आज्ञा नहीं चलाता। आज हजारों कलीसियाएं इस संसार में विद्यामान हैं जिनके प्रधान मनुष्य बने हुए हैं। मसीह की कलीसिया या चर्च ऑफ क्राईस्ट कोई डीनोमीनेशन नहीं है तथा इसके लोग उसकी सेवा के लिये जगत से बुलाए गए हैं। (2 थिस्स. 2:14)। जब यीशु ने कहा था, कि मैं अपनी कलीसिया बनाऊंगा तब उसका अर्थ पूरे संसार में उसके नाम से जाने वाली कलीसिया से था (मत्ती 16:18)। मसीह की कलीसिया विश्वव्यापी है, परन्तु सारे संसार में स्थानीय मण्डलियों के रूप में फैली हुई है। (1 कुरि. 1:2)।

सारी स्थानीय मण्डलियों से मिलकर मसीह की कलीसिया बनी है। प्रेरित पोलुस कहता है कि ''तुम्हें मसीह की सारी कलीसियाओं की ओर से नमस्कार'' (रोमियों 16:16)। कलीसिया को कभी भी साम्प्रदायिक रूप से नहीं बोला गया हैं साम्प्रदायिक कलीसियाएं बाइबल अनुसार नहीं है। न्याय के दिन यीशु इस प्रकार से लोगों से नहीं कहेगा कि अच्छा कैथलिक इधर आ जाओ, मैथोडिस्ट वहां खड़े हो जाओ, बैपटिस्ट उस साईड चले जाओ। यह मैं एक उदाहरण दे रहा हूं। हम सब यीशु के न्याय आसन के सामने खड़े होंगे (2 कुरि. 5:10)। देखें यीशु क्या उत्तर देगा, वह उनसे खुलकर कह देगा ''मैंने तुम्हें कभी नहीं जाना'' मैं तुम्हें जानता तक नहीं, मेरे पास से चले जाओ (मत्ती 7:23)। सारी सामप्रदायिक कलीसियाओं की शुरूआत मनुष्यों ने की थी परन्तु मसीह की कलीसिया यीशु ने बनाई थी और वह इसका प्रधान है (कुलु. 1:18)।

अब एक ओर विशेष बात यह है कि प्रत्येक मसीह की कलीसिया आत्मनिर्भर है। स्थानीय मण्डली को स्थानीय लोग चलाते है। तथा उनके यहां जो प्रचारक या अगुवे होते होते हैं वे सदस्यों की अगुआई करते है। परन्तु याद रखिये उनका कोई प्रधान पास्टर या प्रधान प्रचारक नहीं होता। किसी भी कलीसिया या मण्डली को दूसरे स्थानों से आज्ञा नहीं मिलती। मसीह की कलीसिया में प्रत्येक स्थान पर योग्य लोगों को ऐलडर बनाया जाता था। यह ऐलडर आयु में बड़े तथा अनुभवी होते थे। इन्हें पास्टर भी कहा जाता था। उनकी कुछ विशेष योग्यताएं होती थी जिनके विषय में 1 तीमु. 3:1-7 तथा तीतुस 1:5-9 में हम पढ़ते हैं। यह ऐल्डर एक से अधिक होते थे। यानि मसीह की कलीसियों में दो या उससे अधिक ऐल्डर नियुक्त होते थे। क्योंकि यदि एक ऐल्डर होगा तो वह अपनी मर्जी चलायेगा। कई बार लोग प्रचारक या ऐल्डर में भिन्नता नहीं समझते। सब मण्डलियों के अपने ऐल्डर होते हैं तथा वे कभी भी दूसरों को ऑर्डर नहीं देते। मैं जो यह बातें लिख रहा हूं यहसब बाइबल अनुसार एक नमूना है। पतरस ने ऐलडर्स से कहा था कि ''परमेश्वर के उस झुंड की जो तुम्हारे बीच में है रखवाली करो; और यह दबाव से नहीं; परन्तु परमेश्वर की इच्छा के अनुसार आनन्द से, और नीच कमाई के लिये नहीं; पर मन लगाकर, और जो लोग (कलिसिया के सदस्य) तुम्हें सौंपे गए हैं, उन पर अधिकार न जताओ, वरन् झुण्ड के लिये नमूना बनो।'' (1 पतरस 5:2-3), और आगे चौथे पद में इस प्रकार से लिखा है, ''और जब प्रधान रखवाला प्रगट होगा, तो तुम्हें महिमा का मुकुट दिया जाएगा, जो मुरझाने का नहीं। स्थानीय कलीसिया का कार्य इस प्रकार से चलता है। पौलुस और बरनाबास ने कई स्थानीय कलीसियाओं में ऐलडर्स (प्राचीन) नियुक्ति किये थे (प्रेरितों 14:23)। कभी भी कहीं हम यह नहीं पढ़ते कि किसी मण्डली में एक ऐल्डर होता था। और कभी भी गलत लोगों को ऐलडर नहीं बनाया जाता था।

कोई भी एक मण्डली दूसरी पर आज्ञा नहीं चलाती थी। परनतु आपस में एक दूसरे की सहायता करते थे। इस संगठन में हम परमेश्वर का बहुत बड़ा ज्ञान देखते है। यदि एक खिड़की में केवल एक बड़ा शीशा लगा हो तो पत्थर मारने पर वो एक ही बार में पूरा टूट जायेगा लेकिन यदि 4-5 अलग शीशे लगे हो तो पत्थर मारने पर एक या दो टूटेंगे, फिर भी कुछ शीशे बचे रहेंगे और यही बात वचन अर्थात् एक से अधिक ऐल्डर्स पर भी सही बैठती है।

परमेश्वर का मार्ग हमेशा सही होता है। कलीसिया को यीशु ने अपने लोहू से खरीदा है। (प्रेरितों 20:28) मनुष्य को कभी भी कलीसिया का इस प्रकार का संगठन पसंद नहीं है। वो सोचता है कि मेरा ही सिक्का चलता रहे और लोग मुझे ही प्रधान मानें। आपको यह समझना चाहिए कि आपको उसे बदलने का कोई अधिकार नहीं है (गलतियों 1:6-9, 2 यूहन्ना 9, प्रकाशित 22:18, 19)।

हमें यह भूलना नहीं चाहिए कि हम चाहे कितने भी बुद्धिमान हो या पैसे या रूतबे वाले हो, प्रधान केवल यीशु है। स्वर्ग और पृथ्वी का सारा अधिकार यीशु का है (मत्ती 28:18)। क्योंकि यीशु स्वर्ग में है इसलिये उसका प्रधान ऑफिस या

मुख्यालय भी स्वर्ग में है। इस पृथ्वी पर हमारा कोई मुख्यालय नहीं है। चर्च ऑफ क्राईस्ट कोई साम्प्रदायिक कलीसिया नहीं है। इसका संगठन बाइबल पर आधारित है तथा कलीसिया के सारे सदस्य मिलकर कार्य करते हैं (रोमियों 12:4, 5)। आपके यहां मण्डली में अभी बाइबल अनुसार योग्य पुरुष यदि नहीं हैं जिन्हें ऐल्डर्स नियुक्त किया जा सके, तब यह शिक्षा दी जा सकती है कि लोग अपने को इसके लिये तैयार करें। परन्तु ऐसा नहीं होना चाहिए कि किसी भी बिना योग्यता वाले व्यक्ति को ऐल्डर नियुक्त कर दिया जाए। जब तक ऐल्डर्स कलीसिया में नहीं हैं तब तक कलीसिया के योग्य पुरुषों को फैसले मिलकर लेने चाहिए। कलीसिया में बहुत से कार्य होते हैं जिन्हें मिलकर किया जाना चाहिए और यदि हम बाइबल अनुसार कलीसिया के कार्य को नहीं करते तब हम उसकी आज्ञा का उलंघन करते है। प्रभु के सामने अपने को नम्र बनाये (याकूब 4:7)। हमें उसके नमूने के अनुसार चलना है। कलीसिया में कड़ी शिक्षा दी जानी चाहिए ताकि सदस्यों में जागरूकता आये। कई प्रचारक नहीं चाहते कि सदस्यों को कड़ी शिक्षा का ज्ञान हो। वे चाहते हैं कि ज्ञान में वे लोग कम ही रहें तो अच्छा है। परन्तु प्रत्येक सदस्य को बाइबल का अध्ययन करना चाहिए। जब आप बाइबल अध्ययन करेंगे तो आपका ज्ञान बढ़ेगा और कोई आपको मूर्ख नहीं बना सकेगा। मसीह की कलीसिया के लोग बाइबल अध्ययन करते हैं तथा अपने को बाइबल अनुसार चलाते हैं। (1 पतरस 2:2; 2 पतरस 3:18)।

---

# पाप नाश करता है

## सनी डेविड

अपने पाठ में, पिछली बार हमने, पाप के विशाल दाम के ऊपर विचार किया था। और हमने निर्धन लाजर और एक बड़े ही धनवान आदमी के बारे में बाइबल में से देखा था। उस धनवान का नाम क्या था, यह तो हम नहीं जानते। लेकिन वह हमारी ही तरह एक बार इस जमीन पर विधमान था और जिंदा था। कितने वर्ष तक वह इस पृथ्वी पर रहा? यह भी हम नहीं जानते। लेकिन यह एक बात हम सब जानते हैं कि एक बार किसी समय वह इस संसार में था और फिर वह मर गया था। और प्रभु यीशु ने कहा था, कि मरने के बाद अधोलोक में वह उस जगह गया था जहां वह ज्वाला में तड़प रहा था। इसलिये नहीं कि वह एक धनवान था, परन्तु इसलिये क्योंकि परमेश्वर की दृष्टि में वह एक अधर्मी था। उसने अपना भरोसा अपने धन पर रखा था। उसने परमेश्वर को और उसके वचन को और उसकी आज्ञाओं को अपने जीवन में कोई स्थान नहीं दिया था। उसने अपनी जिंदगी को सिर्फ अपने ही लिये बसर किया था। उसकी सोच यह थी, जैसे कि आज बहुत से लोगों की है, कि खाओं, पीओ और मौज उड़ाओ क्योंकि एक दिन तो मर ही जाना है। लेकिन उसने इस बात

पर ध्यान नहीं किया था कि मरने के बाद, यानि इस संसार में चले जाने के बाद उसका क्या होगा? शायद उसने कभी अपने शरीर या देह के बारे में अवश्य सोचा होगा, कि वह तो जला दी जाएगी या मिट्टी में दबा दी जाएगी। लेकिन उसने अपनी आत्मा की तरफ़ कभी कोई ध्यान नहीं दिया था। उसने कभी अनन्तकाल के बारे में नहीं सोचा था। उसने कभी स्वर्ग और नरक के बारे में विचार नहीं किया था। या कभी किया भी होगा तो यह सोचा होगा कि स्वर्ग और नरक और कहीं नहीं है पर इस पृथ्वी पर ही हैं। उसने कभी गंभीर होकर इस बात पर भी विचार नहीं किया होगा कि मृत्यु के बाद उस अनन्तकाल में पहुंचकर उसे हमेशा वहीं रहना होगा। और न कभी उसने इस बात को गंभीरता के साथ देखा होगा कि उस अनन्तकाल में रहने के केवल दो ही स्थान है यानि स्वर्ग और नरक। क्योंकि अगर इस धनवान ने इन सब बातों के बारे में सोचा होता तो पृथ्वी पर उस का जीवन निश्चय ही एक दूसरा ही जीवन होता। और ऐसे ही अनन्तकाल में भी उसका स्थान हमेशा के विनाश के विपरीत हमेशा का आनन्द होता।

लेकिन अब हम अपने बारे में क्या सोचते हैं? हमारा जीवन आज इस पृथ्वी पर किस प्रकार से व्यतीत हो रहा है? क्या हम अपनी मर्जी से चल रहे है या तुम हम अपना जीवन परमेश्वर की इच्छानुसार व्यतीत कर रहे हैं? जीवन के प्रति हमारा कैसा व्यवहार है? क्या हम ऐसा जीवन व्यतीत कर रहे है, जिसका उद्देश्य केवल खाना-पीना और मौज उड़ाना ही है? क्या हमने जीवन और मृत्यु के ऊपर गंभीरता के साथ विचार किया है? क्या हम यहां से उस अनन्तकाल में जाने के लिये आज तैयार हैं? क्या हम अपने परमेश्वर के सामने आने को तैयार हैं?

पवित्र बाइबल में लिखा है, कि हर एक इंसान को चाहिए कि वह परमेश्वर का भय माने और उसकी सब आज्ञाओं का पालन करें क्योंकि मनुष्य का सम्पूर्ण कर्तव्य यही है। क्योंकि परमेश्वर मनुष्य के सब कामों और सब गुप्त बातों का, चाहे वे भली हो या बुरी, एक दिन न्याय करेगा। (सभोपदेशक 12:13, 14)। प्रभु यीशु ने न्याय के उस दिन को संबोधित करके एक जगह यूं कहा था, कि इस बात से अचंभा मत करो, क्योंकि वह समय आएगा जबकि सब मरे हुए लोग उसका शब्द सुनकर जी उठेंगे। जिन्होंने भलाई की है वे सब जीवन के पुनरुत्थान के लिये जी उठेंगे। परन्तु जिन्होंने बुराई की है वे सब दण्ड के पुनरुत्थान के लिये जी उठेंगे। (यूहन्ना 5:28, 29)। और फिर प्रेरित पौलुस ने पवित्रात्मा की प्रेरणा से लिकखकर कहा था कि, धोखा न खाओ, क्योंकि परमेश्वर को ठट्ठों में नहीं उड़ाया जा सकता, क्योंकि मनुष्य जैसा बोएगा वैसा ही वह काटेगा भी और जो इंसान अपने शरीर के लिये बोता है, वह शरीर ही के द्वारा विनाश की कटनी काटेगा, परन्तु जो इंसान आत्मा के लिये बोता है, वह आत्मा के द्वारा अनन्त जीवन की कटनी काटेगा। (गलतियों 6:7, 8)। परमेश्वर के वचन की बातों को हमें हंसी में नहीं उड़ाना चाहिए। यह ऐसी अनन्त बातें हैं जिन्हें उसने हमें इस जीवन में दिया है और न्याय के दिन वह इन्हीं सब बातों के द्वारा हम सब का न्याय भी करेगा। प्रभु यीशु ने कहा था कि, "मैं जगत में ज्योति होकर आया हूं ताकि जो कोई मुझ पर विश्वास करे, वह अंधकार में न रहे। यदि

कोई मेरी बातें सुनकर न माने, तो मैं उसे दोषी नहीं ठहराता, क्योंकि मैं जगत को दोषी ठहराने के लिये नहीं, परन्तु जगत का उद्धार करने के लिये आया हूं। जो मुझे तुच्छ जानता है, और मेरी बातें ग्रहण नहीं करता है, उसको दोषी ठहराने वाला तो एक है, अर्थात् जो वचन मैं ने कहा है, वही पिछले दिन में उसे दोषी ठहराएगा।" (यूहन्ना 12:46-48)।"

आज हम एक बड़े ही उन्नतिशील युग में जीवन बीता रहे हैं। आज का युग बिजली का युग है। और इस बिजली के युग में आज हमें एक ऐसी चीज मीरास में मिली है जो आज लाखों और करोड़ों लोगों का ईश्वर बन गई है। लोग उसे पूजते हैं और इतना लगाव हो गया है उस वस्तु से लोगों को आज कि वे घंटों उसके साथ चिपके बैठे रहते हैं। यहां मेरा अभिप्राय "टी.वी." से है। धन की तरह स्वयं टी.वी. में कोई बुराई नहीं है। किन्तु बुराई उसके दुरुपयोग में है। कुछ लोग घंटों तक बैठकर टी.वी. देख सकते हैं लेकिन परमेश्वर के किसी काम को करने के लिये उनके पास समय नहीं होता। बहुतेरे लोग परमेश्वर की आराधना उपासना तक करने को नहीं आते क्योंकि वे टी.वी. पर अपने किसी खास प्रोग्राम को "मिस" नहीं करना चाहते। उनका ईश्वर उनका टी.वी. है। वे उससे अलग नहीं होना चाहते, उसे छोड़ना नहीं चाहते। और ऐसे ही कुछ लोगों का शौक फिल्मी पत्रिकाएं और नौवल पढ़ना है। वे उन्हें रोज पढ़ सकते हैं और घंटों तक पढ़ सकते हैं किन्तु परमेश्वर के वचन की पुस्तक पर वे कभी ध्यान भी नहीं देते। परमेश्वर के वचन को पढ़ने का उनके पास समय नहीं है। उसके वचन को सुनने का उनके पास समय नहीं है। और फिर ऐसे ही कुछ लोगों का समय और पैसा सिनेमा देखने में जाता है। परमेश्वर भक्ति के लिये उनके पास समय नहीं होता, लेकिन सिनेमा देखने के लिये वे समय निकाल ही लेते है। परमेश्वर के सुसमाचार प्रचार के काम के लिये देने के लिये वे गरीब है, लेकिन सिनेमा देखने के लिये उनके पास पैसे निकल ही आते है। ये बाते मैं आप को इसलिये बता रहा हूं क्योंकि मैं जानता हूं कि यह बातें बिल्कुल सच हैं। मैं यह सब रोज देखता हूं और ऐसे लोगों को व्यक्तिगत रूप से जानता हूं। लेकिन इस बात पर विचार करके देखें कि इन सब बातों से इंसान को मिलता क्या है? एक दिन जब वह इस पृथ्वी से उठाया जाएगा, तब इन में से कौन सी चीज वह अपने साथ लेकर जाएगा? इन सब चीजों से उसे अंत में क्या लाभ होगा?

शायद आप उस धनवान की तरह नहीं है जो अपने धन के नशे में मतवाला होकर संसार में ऐसा खो गया था कि उसे परमेश्वर और उसकी आज्ञाओं का और अपनी आत्मा का कोई ध्यान नहीं रहा था और अंत में इसी कारण से उसे अपने प्राणों को हमेशा के लिये नरक की आग में खोना पड़ा था। लेकिन हो सकता है कि आज आप किसी और चीज के नशे में मतवाले है, हो सकता है संसार की किसी और वस्तु ने आपकी आंखें आज बंद कर रखी है। पर यदि आप अपना मन नहीं फिराएंगे और परमेश्वर की आज्ञा को मानकर उसके पास नहीं लौटेंगे, तो याद रखिए, उसी वस्तु के कारण आप को अनन्तकाल में हमेशा के विनाश के दण्ड का सामना करना पड़ेगा। और कौन जानता है उस दिन को कि वह हम पर कब आ पड़े?

परमेश्वर की पुस्तक बाइबल में लिखा है, कि "परमेश्वर ने जगत से ऐसा प्रेम रखा कि उसने अपना एकलौता पुत्र दे दिया, ताकि जो कोई उस पर विश्वास करे, वह नाश न हो, परन्तु अनन्त जीवन पाए" (यूहन्ना 3:16)। बीमारी मनुष्य को वास्तव में नाश नहीं करती, आग मनुष्य को वास्तव में नाश नहीं करती, तलवार मनुष्य को वास्तव में नाश नहीं करती और दुनिया में कोई बड़े से बड़ा भी इतनी ताकत नहीं रखता कि वह इंसान के अस्तित्व को हमेशा के लिये खत्म कर दे। केवल एक ही ऐसी चीज है दुनिया में जो मनुष्य को नाश करती है, और वह है "पाप"। लेकिन परमेश्वर ने अपने एकलौते पुत्र को दे दिया, ताकि जो कोई उसमें विश्वास लाए वह नाश न हो पाप के कारण, परन्तु वह अनन्त जीवन पाए। कैसा महान है परमेश्वर का प्रेम और उसका अनुग्रह, उसने अपने एकलौते पुत्र को दे दिया ताकि हम नाश न हो।

परमेश्वर का सामर्थी वचन स्वर्ग की महिमा को छोड़कर पृथ्वी पर आ गया। वह एक इंसान बना और उसने एक इंसानी जिंदगी को जमीन पर बसर किया। और फिर उसने अपने पवित्र जीवन को क्रूस की शर्मनाक और भयानक मौत के हवाले कर दिया। बाइबल में लिखा है, कि वह हमारे पापों का प्रायश्चित है यानी उसने अपनी मृत्यु के द्वारा हम सब के पापों का दाम भर दिया है। और बाइबल कहती है, कि जो कोई भी अब यीशु में विश्वास लाएगा और पाप से अपना मन फिराएगा और यीशु के नाम से अपने पापों की क्षमा के लिये बपतिस्मा लेगा, और यीशु के जीवन का पालन करेगा, तो वह अपने सब पापों से छुटकारा पाकर परमेश्वर के स्वर्ग में हमेशा की जिंदगी पाएगा। (मरकुस 16:16, प्रेरितों 2:38)। दुनिया में हर एक इंसान पापी है, और पाप के कारण वह परमेश्वर से अलग है। किन्तु परमेश्वर ने हम सबसे ऐसा प्रेम रखा कि उसने यीशु मसीह में होकर खुद हम सबके पापों का दण्ड अपने ऊपर उठा लिया और हमें यह अवसर दिया कि हम यीशु के पास आकर, और उसमें होकर पाप से मुक्त होकर परमेश्वर के पास वापस आ जाएं। पाप इंसान को नाश करता है। लेकिन यीशु इंसान का उद्धार करता है। मनुष्य को चाहिए कि पाप से अपना मन फिराकर यीशु के पासा आ जाए। क्या आप आएंगे?

---

# क्या आप प्रभु से मिलने के लिए तैयार हैं?

## जे.सी. चोट

मैं अपने इस लेख में एक बहुत आवश्यक बात के विषय में आपको बताऊंगा। यह आवश्यक बात इसलिये हैं, क्योंकि हमें अपने आपको प्रभु से मिलने के लिये तैयार करना है।

आज हम एक ऐसे संसार में रह रहे हैं जहां चारों तरफ बुराई ही बुराई दिखाई देती है। लोग मनोरंजन के अलग-अलग साधन खोज रहे हैं।

मोबाइबल तथा इंटरनेट के द्वारा भी बहुत सी बुराईयां फैल रही हैं और लोगों में धन दौलत कमाने की होड़ लगी हुई है तथा लोग भौतिक वस्तुओं के पीछे अधिक भाग रहे हैं। मनुष्य शायद ऐसा सोचता है कि वह इस पृथ्वी पर हमेशा रहेगा। परन्तु यह सब होते हुए कौन ऐसा सोच रहा है कि परमेश्वर से मिलेने के लिये हमें अपने को तैयार करना है? अर्थात् प्रभु के आगमन के लिये हमें अपने को तैयार करना है। यीशु ने कहा था, "उस दिन और उस घड़ी के विषय में कोई नहीं जानता, न स्वर्ग के दूत और न पुत्र, परन्तु केवल पिता जैसे नूह के दिन थे, वैसा ही मनुष्य के पुत्र का आना भी होगा। क्योंकि जैसे जल प्रलय से पहिले के दिनों में जिस दिन तक कि नूह जहाज पर न चढ़ा उस दिन तक लोग खाते-पीते थे और उनमें ब्याह-शादी होती थी। और जब प्रभु आयेगा तब वह अपने राज्य में उन लोगों को दण्ड देगा जो ठोकर का कारण है। यीशु कहता है, "मनुष्य का पुत्र अपने स्वर्गदूतों को भेजेगा और वे उसके राज्य में से सब ठोकर के कारणों को और कुकर्म करने वालों को इक्ट्ठा करेंगे। और उन्हें आग के कुण्ड में डालेंगे वहां रोना और दांत पीसना होगा।" (मत्ती 13:41-42)

फिर हम, आगे पढ़ते हैं कि प्रभु आ रहा है, ताकि उनसे बदला ले जो सुसमाचार को नहीं मानते वह उनसे बदला लेगा। प्रेरित पौलुस लिखते हुए कहता है, "और तुम्हें जो कलेश पाते हो, हमारे साथ चैन दे, उस समय जब कि प्रभु यीशु अपने सामर्थी दूतों के साथ धधकती हुई आग में स्वर्ग से प्रगट होगा। ओर जो परमेश्वर को नहीं पहचानते और हमारे प्रभु यीशु के सुसमाचार को नहीं मानते उन से पलटा लेगा। वे प्रभु के सामने से और उसकी शक्ति के तेज से दूर होकर अनन्त विनाश का दण्ड पाएंगे। (2 थिस्स. 1:7-9)।

यीशु एक दिन सबका न्याय करेगा। एक दिन सब उसके न्याय आसान के सामने इक्ट्ठे होंगे। (2 कुरि. 5:10)। प्रत्येक जन को उसके कामों का फल मिलेगा, चाहे भले या बुरे और प्रेरितों 17:31 में लिखा है कि प्रभु यीशु न्यायी होगा। और यह न्याय उसके वचन बाइबल पर आधारित होगा। (यूहन्ना 12:48)। उस दिन जो धर्मी लोग होंगे उन्हें प्रभु अनन्त जीवन देगा तथा दुष्ट लोग अनन्तकाल का दण्ड भोगेगे। (मत्ती 25:46)। इसलिये यह आवश्यक है कि हम उसके वचन अनुसार अपने को तैयार करें। प्रभु से मिलने के लिये हमें अपने को तैयार करना है। जो मूर्ख है उन्हें प्रभु की बातों से कोई लेना देना नहीं है तथा वे सदा भौतिक वस्तुओं की खोज में रहते हैं। परन्तु जो बुद्धिमान हैं वे प्रभु के आगमन के लिये तैयार रहेंगे।

हमें यह जानना चाहिए और यह एक वास्तविक्ता है कि हम सबको एक दिन मरना है। और फिर हमें न्याय का सामना करना है (इब्रानियों 9:27)। अभी यदि हमने प्रभु की आज्ञा को नहीं माना है तो आज ही इसके विषय में विचार कीजिये। हमारे पास यह सुअवसर है कि हम प्रभु की आज्ञा को मानें। एक बार जब मनुष्य इस संसार से चला जाता है तब उसके हाथ से प्रभु की आज्ञा मानने का मौका चला जाता है और फिर एक दिन उसे न्याय का सामना करना पड़ेगा। हमारे पास इस पृथ्वी पर रहते

हुए सुअवसर है कि हम प्रभु की आज्ञा को मान सकें।

जैसा कि हमने देखा कि न्याय का दिन आ रहा है तथा जैसा जीवन हमने पृथ्वी पर गुजारा है उसके अनुसार हमारा न्याय होगा। अपने न्याय से प्रभु कोई चूक नहीं करेगा। परन्तु उन लोगों के लिये बड़े दुख की बात होगी जो प्रभु के सामने बिना तैयारी से जायेंगे।

मित्रो हमारे लिये इतना काफी नहीं है कि हम अच्छा जीवन बिताये बल्कि अच्छे जीवन के साथ प्रभु की आज्ञाओं को मानना बहुत ही आवश्यक है। कुरनेलियस के विषय में हम पढ़ते हैं कि वह एक बहुत अच्छा व्यक्ति था परन्तु उसका उद्धार नहीं हुआ था। प्रेरितों 10 अध्याय में हम पढ़ते हैं कि वह अच्छे कार्य करता था, परन्तु उसका उद्धार नहीं हुआ था। यीशु ने कहा था, "जो मुझसे हे प्रभु, हे प्रभु कहता है, उनमें से हर एक स्वर्ग के राज्य में प्रवेश नहीं करेगा, परन्तु वही जो मेरे स्वर्गीय पिता की इच्छा पर चलता है। उस दिन बहुतेरे मुझसे कहेंगे, हे प्रभु हे, प्रभु क्या हमने तेरे नाम से भविष्यवाणी नहीं की और तेरे नाम से दुष्टात्माओं को नहीं निकाला, और तेरे नाम से बहुत अचम्भे के काम नहीं किए? तब मैं उनसे खुलकर कह दूंगा कि मैंने तुम को कभी नहीं जाना, हे कुकर्म करने वालों मेरे पास से चले जाओ।" (मत्ती 7:21-23)। हमारा पैसा, हमारी शिक्षा या बड़ा रूतबा हमें स्वर्ग में नहीं ले जा सकता।

अब प्रश्न यह है कि हम प्रभु से मिलने के लिये अपने को कैसे तैयार कर सकते हैं? यह बहुत ही सरल है। आपको विश्वास करना है कि प्रभु ने अपने प्राणों को आपके लिये दिया है। तथा उसने आपके उद्धार को संभव बना दिया है। अब यह आवश्यक है कि हम उसमें विश्वास करें तथा उसकी आज्ञा को मानें (यूहन्ना 14:1)। यीशु ने कहा था तुम परमेश्वर में विश्वास करते हो मुझ पर भी विश्वास करो। यीशु ने यह भी कहा था, "इसलिये मैंने तुम से कहा, कि तुम अपने पापों में मरोगे, क्योंकि यदि तुम विश्वास न करोगे कि मैं वही हूं तो अपने पापों में मरोगे।" (यूहन्ना 8:24)।

अब क्या आपके लिये ऐसा करना कठिन है? इसके बाद हम देखते हैं कि प्रभु हमसे चाहता है कि हम अपना मन फिराए। यानि अपने पापों से मन फिरायें। बाइबल कहती है, "मन फिराओ या फिर नाश हो" (लूका 13:3) कई लोगों के लिये ऐसा करना बड़ा कठिन होता है। कई बार अनुचित शिक्षा, गलत आदतों को छोड़ना बड़ा कठिन लगता है। पर हमें मन फिराना पड़ेगा। फिर हमें यीशु का अंगीकार करना है कि वह परमेश्वर का पुत्र है। (मत्ती 10:32) यदि हम ऐसा करेंगे तो प्रभु भी पिता परमेश्वर के सामने हमारा अंगीकार करेगा। फिर हमें अपने पापों की क्षमा के लिये जल में बपतिस्मा लेना है। (मरकुस 16:16; प्रेरितों 2:38)। प्रभु के आगमन के लिये तैयार रहे।

---

# क्रूस के प्रदर्शन

## जॉन स्टेसी

इब्रानियों 12:1-2 में हम इस प्रकार पढ़ते हैं, "...वह दौड़ जिसमें हमें दौड़ना है, धीरज से दौड़ें। और विश्वास के कर्ता और सिद्ध करने वाले यीशु की ओर ताकते रहें...।" यदि हम मसीह के क्रूस के ऊपर ध्यान दें तो उसमें हमें चार बड़ी ही मुख्य बातें नजर आती हैं।

सबसे पहले, मसीह के क्रूस में हम यह देखते हैं कि परमेश्वर पाप को कैसे देखता है। मनुष्य पापों को एक आकस्मिक घटना कहता है, परन्तु परमेश्वर के सामने वह एक घिनौनी वस्तु है। मनुष्य पाप को एक गलती कहता है, लेकिन परमेश्वर पाप को अंधकार कहता है। मनुष्य पाप को एक कमजोरी कहता है, परन्तु परमेश्वर उसे अपनी आज्ञा का उल्लंघन कहता है। परमेश्वर पाप से घृणा करता है। बाइबल कहती है, "जो कोई पाप करता है, वह व्यवस्था का विरोध करता है; और पाप तो व्यवस्था का विरोध है।" और फिर इस प्रकार लिखा है, "फिर अभिलाषा गर्भवती होकर पाप को जनती है और पाप जब बढ़ जाता है तो मृत्यु को उत्पन्न करता हैं।" मसीह के क्रूस के द्वारा परमेश्वर ने पाप को नाश किया था। 1 यूहन्ना 3:8 में हम इस प्रकार पढ़ते हैं, "...परमेश्वर का पुत्र इसलिए प्रकट हुआ कि शैतान के कामों को नाश करें।"

दूसरा, मसीह का क्रूस मनुष्य को उसके असली चेहरे को दिखाता है। जो कुछ भी उस के चारों ओर घटा था, उससे हम यह देखते हैं कि जब मनुष्य ने अपने धार्मिक नकाब को ऊपर उठाया था तो नरक में उसकी आत्मा आग में जल रही थी। मत्ती 28:18 बताता है, "क्योंकि वह जानता था कि उन्होंने उसे डाह से पकड़वाया है।" मत्ती 27:23 में लिखा है, "....परन्तु वे और भी चिल्ला-चिल्लाकर कहने लगे, वह क्रूस पर चढ़ाया जाए।" जिन लोगों ने यीशु को क्रूस पर चढ़ाया था, उनका वर्णन करके प्रेरितों 2:23 में पतरस इस प्रकार कहता है, "उसी को, जब वह परमेश्वर की ठहराई हुई मंशा और होनहार के ज्ञान के अनुसार पकड़वाया गया, तो तुम ने अधर्मियों के हाथ से उसे क्रूस पर चढ़ाकर मार डाला।" उन लोगों के पाप की विशालता को मत्ती 27:25 में लिखे इन शब्दों से देखा जा सकता है। उन्होंने कहा था, "कि इस का लोहू हम पर और हमारी संतान पर हो।" सो जो कुछ क्रूस के आस-पास घटा था, उस सबसे हम यही देखते हैं कि मनुष्य कितना पाप से भरा है, परन्तु परमेश्वर कितना महान है।

तीसरे स्थान पर मसीह के क्रूस में परमेश्वर के प्रेम को देखा जा सकता है। उसमें हमें परमेश्वर की महानता प्रत्यक्ष देखने को मिलती है। रोमियों 5:8 में पौलुस यूं कहता है, "परन्तु परमेश्वर हम पर अपने प्रेम की भलाई इस रीति से प्रकट करता है कि जब हम पापी ही थे, तभी मसीह हमारे लिए मरा।" फिर इफिसियों 2:4 में पौलुस इस प्रकार कहता है, "परन्तु परमेश्वर ने जो दया का धनी है; अपने उस बड़े

प्रेम के कारण, जिससे उसने हम से प्रेम किया।" परमेश्वर का प्रेम अनन्त प्रेम है। "यहोवा का धन्यवाद करो, क्योंकि वह भला है और उसकी करुणा सदा की है" (भजन संहिता 136:1)। यूहन्ना बड़े ही सरल परन्तु मजबूत शब्दों में लिखकर कहता है कि "परमेश्वर प्रेम है" (1 यूहन्ना 4:8)।

इस संबंध में अंतिम बात हम यह देखते हैं कि मसीह का क्रूस यह दिखाता है कि मनुष्य की आशा पूरी हो सकती है। मसीह के क्रूस के कारण अपने पापों की क्षमा प्राप्त करना मनुष्य के लिए अब एक वास्तविकता बन गई है। इफिसियों 1:7 में पौलुस कहता है, ''हम को उस में उसके लोहू के द्वारा छुटकारा, अर्थात् अपराधों की क्षमा, उसके उस अनुग्रह के धन के अनुसार मिला है।" ऐसे ही, परमेश्वर के साथ मेल करने की आशा भी मसीह के क्रूस के द्वारा हमें मिली है। कुलुस्सियों 1:20 में पौलुस कहता है, "और उसके क्रूस पर बहे हुए लोहू के द्वारा मेल-मिलाप करके सब वस्तुओं का उसी के द्वारा से अपने साथ मेल कर ले चाहे वे पृथ्वी की हों, चाहे स्वर्ग में की"। इसी के साथ, अन्त में हम यह देखते हैं कि क्रूस के द्वारा मनुष्य की इस आशा को बल मिल गया है कि इस जीवन के बाद उसके लिए स्वर्ग में एक अनन्त स्थान है। फिलिप्पियों 3:20 में पौलुस ने बताया था, "पर हमारा स्वदेश स्वर्ग पर है....।"

---

# एक नया आरंभ

## रैनी रोए

"यीशु ने उसको उत्तर दिया, "मैं तुझ से सच-सच कहता हूं, यदि कोई नये सिरे से न जन्मे तो परमेश्वर का राज्य देख नहीं सकता। नीकुदेमुस ने उससे कहा, "मनुष्य जब बूढ़ा हो गया, तो कैसे जन्म ले सकता है? क्या वह अपनी माता के गर्भ में दूसरी बार प्रवेश करके जन्म ले सकता है?' यीशु ने उत्तर दिया, "मैं तुझ से सच कहता हूं, जब तक कोई मनुष्य जल और आत्मा से न जनमे तो वह परमेश्वर के राज्य में प्रवेश नहीं कर सकता" (यूहन्ना 3:3-5)। यीशु ने नीकुदेमुस को नये जनम का महत्व इस प्रकार बताया था। आज हम इसी आवश्यकता की घोषणा जोर से करते हैं। परन्तु क्या हम सचमुच समझते हैं कि नया जन्म लेने के लिए क्या करना चाहिए? नये जन्म के विषय में पौलुस ने बताया, "सो यदि कोई मसीह में है तो वह नई सृष्टि है: पुरानी बातें बीत गई हैं; देखो, वे सब नई हो गई" (2 कुरिन्थियां 5:17)। पौलुस को मालूम होना चाहिए था कि वह पापियों में सबसे बड़ा था क्योंकि वह कलीसिया का सबसे बड़ा विरोधी था (1 तीमुथियुस 1:15)। परन्तु वह कलीसिया का सबसे बड़ा हितैषी बन गया। यह सब कैसे हो गया? वह नया बन गया था जिस कारण उसे एक नया आरंभ मिला था।

इस प्रकार का नया आरंभ करना जिसमें पिछली बातों को छोड़कर बिल्कुल नये सिरे से आरंभ किया जाता है, क्या बहुत बड़ी बात नहीं है? मसीही बनने पर बिल्कुल

यही होता है। पुराना जीवन खत्म हो जाता है और नया जीवन आरंभ हो जाता है। मेरे जीवन का उद्देश्य नया हो जाता है और प्रभु मुझे नई दिशा देता है। मेरा जीवन अब पुराने विचारों और कामों के बीच नहीं घिरा। मैं नया और ताजा हो गया हूं।

जब मैं अपने पिछले पापों से मन फिरा लेता हूं यानी मैं उन से मुड़ता हूं तो अपने पहले जीवन को बदलकर परमेश्वर की ओर मुड़ता हूं। मैंने ठान लिया है कि मैं उसे प्रसन्न करने वाला जीवन जीऊंगा। मुझे अपने पुराने जीवन वाले ढंग से मर जाना यानी उसे छोड़ देना आवश्यक है। रोम में कलीसिया के नाम पौलुस ने लिखा, "क्या तुम नहीं जानते, कि हम जितनों ने मसीह यीशु का बपतिस्मा लिया, तो उस की मृत्यु का बपतिस्मा लिया? सो उस मृत्यु का बपतिस्मा पाने से हम उसके साथ गाड़े गए, ताकि जैसे मसीह पिता की महिमा के द्वारा मरे हुओं में से जिलाया गया, वैसे ही हम भी नए जीवन की सी चाल चलें। क्योंकि यदि हम उसकी मृत्यु की समानता में उसके साथ जुट गए हैं, तो निश्चय उसके जी उठने की समानता में भी जुट जाएंगे" (रोमियों 6:3-5)। हम पाप के जीवन से मरते हैं और परमेश्वर के लिए जीने के लिए नये सिरे से जन्म लेते हैं।

नई सृष्टि के रूप में मुझे अपने कामों को बदलने के लिए अपने विचारों को बदलना आवश्यक है। पौलुस हमें याद दिलाता है, "सो जब तुम मसीह के साथ जिलाए गए, तो स्वर्गीय वस्तुओं की खोज में रहो, जहां मसीह वर्तमान है और परमेश्वर के दाहिनी ओर बैठा है। पृथ्वी पर की ही नहीं, परन्तु स्वर्गीय वस्तुओं पर ध्यान लगाओ" (कुलुस्सियों 3:1-2)। पौलुस पाप के कई व्यवहारों को बताता है, जिन्हें हमें अपने जीवन में से निकालना आवश्यक है, और वह धर्म के कई कामों को बताता है जिन्हें हमें अपने जीवन में अपनाना आवश्यक है (कुलुस्सियों 3:5-17)।

नई सृष्टि होने के कारण, मेरा जन्म एक नये परिवार में हुआ है, मुझे नया नाम मिला है। मेरा यह नाम जो मुझे अब मिला है, किसी भी अन्य नाम से जो मुझे मिल सकता है, श्रेष्ठ है। परमेश्वर ने अपने लोगों को यह विशेष नाम देने की प्रतिज्ञा की थी (यशायाह 62:2)। अब यह नाम मुझे मिल चुका है। मैं परमेश्वर का हूं और मुझे उसी का नाम मिला है, जिस कारण मैं मसीही कहलाता हूं (प्रेरितों 11:26; 1 पतरस 4:16)। हम "एक चुना हुआ वंश और राजपदधारी याजकों का समाज और पवित्र लोग, और (परमेश्वर की निज प्रजा" है, जिन्हें उसने "अंधकार में से अपनी अद्भुत ज्योति में बुलाया है" (1 पतरस 2:9)।

क्या आप ने कभी सोचा है कि यदि आपका कोई कोई बड़ा धनवान सगा-संबंधी हो और उसकी मृत्यु हो जाए और अपनी सम्पत्ति आपके नाम कर जाए तो क्या होगा? परमेश्वर की संतान के रूप में हम परमेश्वर के बालक और यीशु मसीह के साथ संगी अधिकारी हैं (रोमियों 8 : 16, 17)। यह कितनी बड़ी बात है। मुझे जीवन में इससे बढ़कर और क्या चाहिए? परमेश्वर ने इस जीवन में हमें श्रेष्ठ वस्तुएं दी हैं और अपने साथ अनन्तकाल तक रहने की प्रतिज्ञा भी दी है।

नये सिरे से जन्म लेना अर्थात् नया जीवन आरंभ करना कितनी बड़ी आशीष है।

अब हम परमेश्वर को अपना पिता और मसीह को अपना भाई कहते हैं और उनके पास हम सबके लिए कुछ रखा है। क्या आप ने नया जीवन आरंभ किया है? आज ही नया आरंभ करने का ढंग जानकर परमेश्वर के परिवार में जन्म क्यों नहीं ले लेते? उसके परिवार में जन्म लेने के लिए विश्वास करना (मरकुस 16:16), पापों से मुड़ना या मन फिराना (लूका 13:1-5), अपने इस विश्वास का अंगीकार करना कि यीशु परमेश्वर का पुत्र है (रोमियों 10:9-10) और फिर पापों की क्षमा के लिए बपतिस्मा लेना आवश्यक है (प्रेरितों 2:36)। तब आप नई सृष्टि, यानी परमेश्वर की संतान बन जाएंगे, जिसे प्रतिदिन उसकी सेवा करने का गौरव प्राप्त होता है।

---

# जयवंत से भी बढ़कर

## (रोमियों 8)

## कॉय रोपर

### बदला हुआ जीवन आशिषों से भरपूर है....।

रोमियों 8:35-39 जय पाने अर्थात् विजय की बात करता है। यह ऐसा संदेश है जिसे हम सब सुनना चाहते हैं। जीवन की परीक्षाएं हमें हर ओर से बुलाती हैं और ऐसा लगता है कि हम जीत नहीं सकते। आत्मिक दृष्टिकोण से भी कई बार हमें यही लगता है कि विजय असंभव है। हम मसीही बन गए हैं, यह सही है। परन्तु हमारे अतीत में भयंकर पाप है; वर्तमान में बड़ी-बड़ी परीक्षाएं है; भविष्य का कोई पता नहीं है। हम अपने अतीत में कैसे जी सकते हैं? वर्तमान की परीक्षाओं के बावजूद हम अपने विश्वास पर कैसे टिके रह सकते हैं? उन समस्याओं में जो कल आ सकती हैं हम कैसे स्थिर रह सकते हैं? हम विजय कैसे पा सकते हैं?

यह वचन कहता है कि हम पा सकते हैं। वचन यह नहीं कहता कि हम परीक्षाओं और त्रास्दियों से मुक्त हो जाएंगे। पर यह कहता है कि उन परीक्षाओं के बावजूद हम विजय पा सकते हैं, हम जीत सकते हैं, हम जयवंत हो सकते हैं। वास्तव में यह इससे भी बढ़कर कहता है। यह कहता है कि हम "जयवंत से भी बड़कर" हो सकते हैं। "जय पाना" के लिए सामान्य शब्द से लिया गया है। इस कारण पौलुस कहता है कि हम केवल जयवंत ही नहीं बल्कि अति-जयवंत है। अत: उसके कहने का अर्थ था कि हम "बहुत ही महिमामय विजय" पाते हैं। अन्य संस्करणों में इसे इस प्रकार अनुवाद किया गया है: "हम जबर्दस्त विजय पाते हैं" (फिलिप्स)") जबर्दस्त विजय हमारी है। "हम जबर्दस्त ढंग से जयवंत होते हैं" "हमने पूर्ण विजय पाई है" "हम महिमामय ढंग से जयवंत होते रहते हैं" (विलियम्ज)।

हम सभी समझ सकते हैं कि "जबर्दस्त ढंग से विजय पाने" का क्या अर्थ है, क्या हम नहीं समझ सकते? यह तो ऐसे है जैसे हम दौड़ में, मानो मैराथन, अर्थात 26 मील लम्बी दौड़ में भाग ले रहे हैं। और हम जीत जाते हैं। हम केवल फीते पर ही नहीं जीतते, बल्कि दस मील से जीतते है। या हम फुटबाल टीम में खेल रहे हैं और हम जीत जाते हैं, परन्तु यह जीत 14-13 गोलों से नहीं बल्कि 99-0 गोलों से है। यह ऐसा है जैसे हम जीतने के लिए ही हों और हम जीत जाते हैं, परन्तु केवल जीतते ही नहीं है। हम केवल थोड़ा सा लाभ नहीं कमाते बल्कि लाभ में लाखों रूपये कमाते हैं। मसीही होने के नाते जीवन की कठिनाइयों पर जय हम इसी तरह से पाते हैं। परमेश्वर केवल "थोड़ी सी सफलता" या थोड़े से विजय नहीं बनाना चाहता था, बल्कि वह

हमें "जबर्दस्त विजय" देता है। हम "अति-जयवंत" होते हैं। मसीही लोग "जयवंत से भी बढ़कर" है। कैसे? रोमियों 8 उन ढंगों की बात करता है जिनसे परमेश्वर ने हमें आशीष दी है। जो हमारे लिए परिस्थितियों पर जय पाना संभव बनाते हैं। और बेहतर ढंग से समझने के लिए कि हम क्यों कह सकते हैं कि हम "जयवंत से भी बढ़कर है" उन आशीषों पर विचार करते हैं।

## जयवंत से भी बढ़कर क्योंकि हम दण्ड के अधीन नहीं है (रोमियों 8:1-8)

पौलुस कहता है, "जो मसीह यीशु में है, उन पर दण्ड की आज्ञा नहीं" (रोमियों 8:1)। मसीही बनने से पूर्व हम दण्ड के अधीन थे। हम ने पाप किया था और पाप का दण्ड हमारे ऊपर सुना दिया गया था जो मृत्यु है (रोमियों 6:23)। हमें मृत्यु का दण्ड दिया गया था। परन्तु "मसीह यीशु में" हमें दण्ड से मुक्त कर दिया गया। हम यीशु में विश्वास लायें, अपने पापों से मन फिराया, यह अंगीकार किया कि यीशु परमेश्वर का पुत्र है और यीशु में बपतिस्मा लिया (रोमियों 6:3, 4)। फिर हमारे पाप क्षमा कर दिए गए यानी हम नया जनम पाकर परमेश्वर की संतान बन गए। दण्ड को हटा लिया गया। हमें पता चला कि किसी और ने पहले ही हमारा दण्ड चुका दिया था। हमने "दोषी साबित हुए" शब्द सुने थे। हम उस दिन की प्रतीक्षा में जब दण्ड दिया जाना था। मृत्यु की कतार में बैठे थे। फिर यह स्वागतयोग्य समाचार मिला कि "तुम आजाद हो?" अब हम अपने पापों के दण्ड के अधीन नहीं रहे।

इसका अर्थ यह नहीं है कि हमारे लिए पाप में वापस जाना संभव नहीं होगा। जिससे हम फिर से उस दण्ड में आ जाएं जिससे हम बचे थे। परन्तु इसका अर्थ यह है कि विश्वासी मसीही होने के नाते अब हम दण्ड के अधीन नहीं रहे।

## जयवंत से भी बढ़कर क्योंकि हमारे पास परमेश्वर का आत्मा है (रोमियों 8:9-14)

मसीही होने के नाते हमें पवित्र आत्मा, या परमेश्वर का आत्मा या मसीह का आत्मा मिला है। पवित्र आत्मा हमें तब मिलता है जब हम मसीही बनते हैं (प्रेरितों 2:38; 5:32)। क्यों? एक बात के लिए हमारे अन्दर आत्मा का वास इस तथ्य की गवाही के लिए है कि हमारा उद्धार हो गया है, यानी हम परमेश्वर की संतान बन गए हैं। एक और बात के लिए आत्मा हमें "आत्मा से देह की क्रियाओं को मारोगे" के योग्य बनाता है (रोमियों 8:13)। आत्मा हमें पाप पर विजयी जीवन जीने में सहायता करता है। तीसरा, आत्मा के द्वारा हमें मुर्दों में से जिलाया जाएगा और अन्त में आत्मा किसी "अच्छा महसूस होने वाले" ढंग अर्थात आश्चर्यकर्म के द्वारा नहीं बल्कि विशेष रूप से प्रकट किए गए वचन के द्वारा अगुआई देता है। परन्तु जो बात हमें यह समझने के लिए है कि एक स्वर्गीय अतिथि के रूप में हमारे अन्दर वास करते हुए, हमें मसीही जीवन में सहायता करने के रूप में पवित्र आत्मा मिला है। "दण्ड के अधीन नहीं" अर्थात मृत्यु का दण्ड हटा लिया गया है। और अतीत की बात को दूर कर दिया गया है। हमें वर्तमान परमेश्वर के जीवन में जीने के लिए हमारी सहायता करने के लिए परमेश्वर के आत्मा का वास मिला है। कोई आश्चर्य नहीं कि हम "अती जयवंत" हैं।

## जयवंत से भी बढ़कर क्योंकि हम परमेश्वर की संतान हैं (रोमियों 8:14-17)

परमेश्वर की संतान कहलाना कितनी शानदार बात है। एक बूढ़ा प्रचारक जिससे हर कोई प्रेम करता था, मुस्कुराते चेहरे और गज की तरह तनी छाती के साथ संतुष्ट और आनन्दित ऐसे मिलता था जैसे कभी कुछ गलत हो ही नहीं सकता। किसी ने एक बार उससे पूछ लिया, "आप

ऐसे दिखाई देते हैं जैसे संसार आप ही का हो।" बिना रूके उसने उत्तर दिया, "मेरा नहीं है, परन्तु मेरे पिता का है।" वास्तव में संसार हमारे पिता का ही है। हम निराश या भयभीत क्यों हो? हम इस संसार की परेशानी और कठिनाइयों पर जबर्दस्त विजय पा सकते हैं क्योंकि हम उसकी संतान हैं जिसने संसार को बनाया है।

## जयवंत से भी बढ़कर क्योंकि हम उसके वारिस हैं (रोमियों 8:15-17)

इसका अर्थ यह हुआ कि यदि हम परमेश्वर की संतान है तो हम उसके वारिस भी हैं। क्या करोड़पति की संतान होना और उसके वारिस होना बड़ी बात नहीं होगी? फिर उस पिता की संतान और वारिस होना जिसके पास सब कुछ है इससे भी कितनी बड़ी बात है।

ये भी ध्यान दें कि हम "मसीह के साथ संगी वारिस" है। उस महिमा की जो परमेश्वर के साथ आरंभ से लेकर पृथ्वी पर आकर अपने आपको ईश्वरीयता के कई विशेषाधिकारों से रहित करने के समय परमेश्वर के साथ यीशु अर्थात् वचन की थी। फिर उस स्वागत की कल्पना करें जो पिता के दाहिने हाथ अपने सही स्थान पर लौटने पर उसे मिला। उस समय उसे कितनी जबर्दस्त महिमा, आदर, सामर्थ और तेज मिला होगा। यह हवाला (प्रकाशित वाक्य 3:20 भी देखें) बताता है कि हमें भी ऐसा ही स्वागत यानी ऐसी ही महिमा मिलेगी। हम उसकी मिरास में साझी होंगे। फिर तो हम निश्चिंत रूप से कह सकते हैं कि हम सचमुच में "जयवंत से भी बढ़कर" है।

## जयवंत से भी बढ़कर क्योंकि हमें महिमामय आशा मिली है (रोमियों 8:18-25)

मैं इस पर और जोर नहीं दे सकता जो इस हवाले में और नये नियम के किसी और हवाले में मसीही होने के रूप में हमें समस्याओं या सताव, बीमारी या मृत्यु से छूट दिए जाने की प्रतिज्ञा दी गई हो। यदि मसीही लोगों के ऊपर भी "शरीर के ऊपर आने वाले" सभी रोग आने हैं तो फिर मसीही बनने का मतलब ही क्या है? इसका एक कारण यह है कि क्योंकि मसीही व्यक्ति के लिए बीमारी का अर्थ नया हो सकता है। यानी इसे श्राप के बजाय आशीष के रूप में देखा जा सकता है। यह संभवत लगे भी तौभी मसीही व्यक्ति सर्वदा यह कह सकता है कि "मैं चाहे कितना भी कष्ट सहूं या कितनी भी देर तक सहूं मेरी राह बेहतर जीवन देख रही है। यदि मुझे यहां पर पीड़ा और कष्ट से राहत कभी नहीं मिलें तौभी मुझे यह वहां मिल जाएगा और वह राह अनन्तकालिन होगी।" मसीही व्यक्ति कह सकता है कि कोई और दर्शन या धर्म ऐसी बात नहीं कह सकता।

## जयवंत से भी बढ़कर क्योंकि आत्मा हमारे लिये विनती करता है (रोमियों 8:26, 27)

पवित्र आत्मा हमारे लिए क्या करता है? इस हवाले से पता चलता है कि वह "ऐसी आहें भर भर कर जो ब्यान से बाहर है, हमारे लिए विनती करता है" (रोमियों 8:26)। ऐसे लोग हैं जो यह नहीं मानते कि पवित्र आत्मा हमारे लिए उसके अलावा जो वचन के द्वारा उसने हम पर प्रकट किया है कुछ और करता है। परन्तु यह आयत कहती है कि वह ऐसा करता है जो केवल एक व्यक्ति ही कर सकता है न कि प्रगट किया हुआ वचन। तौभी ध्यान दें कि वह यह नहीं कहता कि वह परमेश्वर के वचन के विपरीत हमारे लिए विनती करता है; बल्कि वह परमेश्वर की इच्छा के अनुसार हमारे लिये सिफारिश करता है। इसके अलावा यह भी जोड़ा जाए कि हम जानते हैं कि आत्मा यह हमारे लिए करता है, न किसी ऐसी विशेष भावना के कारण जो आत्मा हमें देता है, बल्कि वैसे ही जैसे हम जानते हैं कि हमारा उद्धार हो गया है क्योंकि बाइबल अर्थात्

परमेश्वर की प्रेरणा से दिया गया वचन हमें बताता है।

इसके बावजूद आत्मा ही यह करता हैं लेकिन कैसे? और क्यों? मुझे पक्का पता नहीं है, जैसे मुझे यह पता नहीं है कि परमेश्वर मेरे जीवन में सब वस्तुओं को मिलाकर भलाई के लिए काम कैसे करता है। पर मैं जानता हूं कि आत्मा इसे करता है। परमेश्वर ध्यान देता अर्थात् सुनता है और पुष्टि में हमारी प्रार्थनाओं के उत्तर की बात पक्का करता हैं मसीह हमारा मध्यस्थ है और पिता के सामने हमारा केस लड़ता है। और किसी प्रकार पवित्र आत्मा हमारे लिए विनती करता है। शायद वह हमारे मनों की गहरी तड़प को जिसके लिए हमें शब्द नहीं मिलते शब्दों में डाल देता है। कैसे? मुझे पक्का पता नहीं है। मै। तो इतना जानता हूं कि परमेश्वर, मसीह, और पवित्र आत्मा सभी मेरी प्रार्थनाओं में दिलचस्पी लेते हैं और मेरी प्रार्थनाओं का उत्तर देने में सहायता कर रहे हैं। और मेरे लिए यही काफी है। मैं अभूतपूर्वक ढंग से जय पा सकता हूं क्योंकि प्रार्थना करते समय पवित्र आत्मा मेरी सहायता करता है।

## जयवंत से भी बढ़कर क्योंकि हमें परमेश्वर के उपाय से लाभ मिलता है (रोमियों 8:28)

बाइबल में पाई जाने वाली सबसे कीमती प्रतिज्ञाओं में से एक रोमियों 8:28 में मिलती है, "और हम जानते हैं कि जो लोग परमेश्वर से प्रेम रखते हैं, उनके लिए सब बातें मिलकर भलाई ही को उत्पन्न करती हैं, अर्थात् उन्हीं के लिए जो उस की इच्छा के अनकुसार बुलाए हुए हैं।" ध्यान दें कि वह यह नहीं कहता कि जो कुछ हमारे साथ होता है वह अच्छा नहीं होता है। बल्कि यह कहता है कि "परमेश्वर उन सब बातों को मिलाकर भलाई उत्पनन करवाता है" या "सब मिलकर भलाई के लिए काम करते हैं" "जो कुछ भी होता है वह भलाई के सांचे में ढल जाता है" (फिलिप्स)। परमेश्वर हमारे जीवनों की हानिकारक लगने वाली चीजों को निकाल सकता है, जो बुरी या अच्छी दोनों हो सकती है, और फिर उन्हें इस तरह से इक्ट्ठे करता है कि उनमें से बुरी लगने वाली चीजों में से भी वह कुछ भलाई निकाल सकता है। और "भलाई" का अर्थ यहां "सुखद" या "आनन्ददायक" नहीं लिया जाना चाहिए। बल्कि अंतिम रूप में भलाई के रूप में लिया जाना चाहिए, न कि केवल अस्थाई जो परमेश्वर के कार्य के लिए और अंत में, हमारे लिए भला हो।

इसके अलावा ध्यान दें कि यह प्रतिज्ञा सबके लिए नहीं है। यह मसीही लोगों के लिए है क्योंकि मसीही लोग ही केवल इस संसार में "उसकी इच्छा के अनुसार बुलाए हुए है"। यदि आप मसीही नहीं है तो आप इस प्रतिज्ञा का दावा नहीं कर सकते परन्तु यदि मसीही बन जाएं तो कर सकते हैं।

## जयवंत से भी बढ़कर क्योंकि हम उद्धार पाने के लिए ठहराए हुए हैं (रोमियों 8:29, 30)

हमारे लिए इन आयतों से सीखने वाली महत्वपूर्ण बात यह है कि हम उद्धार पाने के लिए ठहराए हुए हैं। पहले से ठहराया होने का अपने आप में अर्थ, सही समझे जाने पर, बाइबल की शिक्षा है। इसका अर्थ यह नहीं है कि कैल्विनवादी पहले से ठहराए होने की बात सही है। कैल्विनवादी पहले से ठहराए होने की शिक्षा, जैसा कि मुझे लगता है कि यह है कि परमेश्वर ने एक अर्थ में संसार का आरंभ होने से पूर्व उद्धार पाए हुए सभी लोगों की एक सूची बनाई और उस सूची में कोई किसी प्रकार का परिवर्तन नहीं कर सकता। इस विचार को नकारा जाना आवश्यक है, एक कारण के लिए, क्योंकि बाइबल सिखाती है कि उद्धार पाने या न पाने की वास्तविक पसंद हमारी अपनी है, जबकि कैल्विनवादी पहले से ठहराए होना उस पसंद के होने से इंकार करता है।

तब भी हम उद्धार पाने के लिए पहले से ठहराए गए हैं। कैसे? शायद बाइबल के अनुसार

पहले से ठहराए होने को समझने का सबसे बढ़िया ढंग यह जान लेना है कि परमेश्वर ने पहले से ठहराया कि वह मसीह के द्वारा लोगों का उद्धार करेगा। जब हम विश्वास और आज्ञापालन में मसीह को ग्रहण करने का निर्णय लेते हैं तो हम अपने आप को उन लोगों में मिला देते हैं जिन्हें परमेश्वर ने पहले से ठहराया है। हम कह सकते हैं कि हम उद्धार पाने के लिए पहले से ठहराए गए हैं।

पर ये आयतें किताबी सच्चाई बताने के उद्देश्य से नहीं थी। उन्हें मसीही लोगों को शांति देने के उद्देश्य से लिखा गया था। वे ऐसा कैसे करती हैं? इस प्रकार वे हमें आश्वस्त करती हैं कि हमारा उद्धार संयोग से नहीं हुआ बल्कि यह योजना के अनुसार हुआ है।

समझाने के लिए, एक गोल्फ का खिलाड़ी दाहिनी ओर ऊबड़ खाबड़ जमीन में पहला शॉट मारता है। उसका शॉट बड़ा अच्छा लगता है सिवाय इसके कि यह बाई ओर की ऊबड़ खाबड़ भूमि में जाता है। उसका तीसरा शॉट हरियाली तक जाता है परन्तु एक बंकर में इसके ऊपर निकल जाता है। चौथे शॉट में वह बंकर में से फूट निकलता है और बॉल को कम में मारता है और उसका निशाना सही लगता है। ऐसे खिलाड़ी को कई बार सक्लैम्बल करने वाला कहा जाता है। वह आगे बढ़ते हुए बेहतर करने का अनुमान लगाकर बुरी स्थितियों में से बाहर आता है और अंत में अपने उद्देश्य को पता लेता है। फुटबाल में हम इसी शब्द का इस्तेमाल करते हैं। क्वाटर बैंक जो खत्म हो रही खेल को आगे बढ़ाए और किसी प्रकार योजना रहित दिशा में बढ़ते हुए ले जाए उसे अच्छा "सक्लैम्बलर" कहा जाता है।

रोमियों 8:29, 30 के कहने का अर्थ यह सुनिश्चित करना है कि परमेश्वर "सक्लैम्बलर" नहीं है। उसने आगे बढ़ते हुए हमें खिलाया नहीं। वह धोखा देने के लिए पैर नहीं घुमाता और फिर उन्हें वापस नहीं लाता। उसने संसार के उद्धार के लिए एक योजना बनाई और उस योजना को वैसे ही लागू किया जैसे उसने चाहा था। हमें यह आश्वासन है कि उस योजना के भाग के रूप में हमें उद्धार मिला है। हमारा उद्धार परमेश्वर की सनातन मंशा का भाग है। हमें उद्धार के लिए पहले से ठहराया गया है इसलिए हम जयवंत से भी बढ़कर है।

## जयवंत से भी बढ़कर क्योंकि परमेश्वर हम से प्रेम करता है (रोमियों 8:31-39)

परमेश्वर का प्रेम महान है: उसने "अपने निज पुत्र को भी न रख छोड़ा"। परमेश्वर का प्रेम सामर्थी है, "यदि परमेश्वर हमारी और है, तो हमारा विरोधी कौन हो सकता है?" (रोमियों 8:31)। परमेश्वर का प्रेम अटल है, "कौन हम को मसीह के प्रेम से अलग करेगा?" पौलुस पूछता है (8:35)। और उसका उत्तर है कि "कोई नहीं" हमारे और परमेश्वर के बीच में न आ सकने वाली बातों की सूची को देखें। क्या आप किसी और बात पर विचार कर सकते हैं जिसे जोड़ा जा सकता हो? लगता है कि पौलुस ने अनुमान लगा लिया था कि कोई यह करने की कोशिश कर सकता है, सो वह यह कहते हुए समाप्त करता है, "देखो, यदि मुझ से कोई बात छूट गई तो मैं उसे इन शब्दों में शामिल करना चाहता हूं, 'न कोई सृष्टि।" सृष्टि में कोई भी चीज, यानी संसार की कोई भी बात हमारे और परमेश्वर के प्रेम के बीच में नहीं आ सकती।

उदाहरण के लिए क्या आप कभी न्यूक्लियर युद्ध के धर्मशास्त्रीय प्रभावों पर चकित हुए हैं? यदि कोई न्यूक्लियर युद्ध हो तो क्या हम धार्मिक दृष्टिकोण से इस पर कुछ कह सकते हैं? क्या बाइबल इसका उल्लेख करती है? हां, यह "न कोई और सृष्टि" वाक्यांश को जोड़ते हुए इसका उललेख करती है। न्यूक्लियर युद्ध या किसी भी विपत्ति के लिए हम एक बात कह सकते हैं कि यदि ऐसा हो जाए तो इसका अर्थ यह नहीं है कि परमेश्वर ने हमसे प्रेम करना छोड़ दिया है। परमेश्वर तब भी हम से प्रेम करता है और सृष्टि की कोई चीज इसे बदल नहीं सकती।

# सृष्टि का क्रम और मनुष्य का गिरना

## बैटी बर्टन चोट

हम मसीही लोग मसीह की व्यवस्था के अधीन हैं, जो कि नये नियम में मिलती है। नई वाचा जिसे परमेश्वर ने अपनी संतान के साथ बांधा है, उन नियमों के स्थान पर दी गई है, जो पुराने नियम के अधीन रहने वाले लोगों पर लागू होते थे। फिर भी ऐतिहासिक रूप में, हम उन बातों से प्रभावित होते हैं, जो मनुष्य के अस्तित्व के उन आरंभिक वर्षों में हुई।

पहला कुरिन्थियों और पहला तीमुथियुस में लिखी बातों में, पवित्र आत्मा ने प्रेरित पौलुस को मसीही स्त्रियों के काम और व्यवहार के संबंध में कुछ आज्ञाएं लिखने का निर्देश दिया।

"स्त्रियां कलीसिया की सभा में चुप रहें, क्योंकि उन्हें बातें करने की आज्ञा नहीं, परन्तु अधीन रहने की आज्ञा है, जैसा व्यवस्था में लिखा भी है" (1 कुरिन्थियों 14:34)।

"मैं कहता हूं कि स्त्री न उपदेश करे, और न पुरुष पर आज्ञा चलाए, परन्तु चुपचाप रहे" (1 तीमुथियुस 2:12)।

ये आज्ञाएं दो ऐतिहासिक तथ्यों के कारण दी गई:

– आदम को पहले बनाया गया था, उसके बाद हव्वा को (1 तीमुथियुस 2:13)।

– भरमाए जाने के कारण बहक कर हव्वा ने अपराध किया, जो मनुष्य जाति के पाप में गिरने का कारण बना (आयत 14)।

1 कुरिन्थियों 11:8, 9, 11, 12 में हम पढ़ते हैं, "क्योंकि पुरुष स्त्री से नहीं हुआ, परन्तु स्त्री पुरुष से हुई है। और स्त्री पुरुष के लिए नहीं सृजा गया, परन्तु स्त्री, पुरुष के लिए सृजी गई है। .... तौभी प्रभु ने न तो स्त्री बिना पुरुष, और न पुरुष बिना स्त्री के है। क्योंकि जैसे स्त्री पुरुष से है, वैसे ही पुरुष स्त्री के द्वारा है; परन्तु सब वस्तुएं परमेश्वर से हैं।"

ये विचार हमें यह बताते हैं कि परमेश्वर के लिए सृष्टि का क्रम न केवल आरंभ में महत्वपूर्ण था, बल्कि घर में क्रम के उसके प्रबंध में आज भी इसे प्रमुखता दी गई है: आदम को पहले बनाया गया था, इस कारण उसे आज भी स्त्री का सिर माना जाता है।

मनुष्य का कोई भी संगठन तरतीब या व्यवस्था के बिना काम नहीं कर सकता। अधिकार का होना और अधिकार वालों को अपनी अगुआई के अधीन काम करने वालों के लिए जवाबदेह माना जाना आवश्यक है। पुरुष को पहले बनाया गया था। इस कारण उसे लीडरशिप की जिम्मेदारी दी गई थी। "लीडरशिप" का अर्थ था कि वह स्त्री के आगे चलकर उसे सही मार्ग पर चलाए। "जिम्मेदारी" का अर्थ था कि वह अपनी लीडरशिप के लिए परमेश्वर को जवाबदेह था, फिर चाहे वह उसे सही मार्ग पर ले जाता या गलत मार्ग पर।

यह भी बात है कि पुरुष को जिम्मेदारी और लीडरशिप दिए जाने का अर्थ यह नहीं था कि स्त्री का कोई महत्व नहीं है। आरंभ में चाहे उसे "पुरुष के लिए" सृजा गया था, परन्तु घर में पत्नी और माता और बच्चों को जन्म देने और उनके पालन-पोषण की उसकी भूमिका के बिना मनुष्य जाति का अस्तित्व असंभव था। इन ढंगों के द्वारा पुरुष और स्त्री दोनों एक-दूसरे पर निर्भर है और परमेश्वर की योजना में उनका बड़ा योगदान है।

परमेश्वर के सृजनकारी हाथ से सृजे होने के कारण मनुष्य सिद्ध थे, यानी वे बिना पाप के थे। परन्तु उन्हें पसंद चुनने का अधिकार दिया गया था। परमेश्वर ने कुछ नियम बना दिए जिन्हें मानना उनके लिए अनिवार्य था। उन नियमों को न मानने, यानी पसंद चुनने की अपनी स्वतंत्रता का इस्तेमाल करने का अर्थ था कि सिद्धता की उस स्थिति से गिरकर अपराधी यानी पापी बन जाते। समय के आरंभ में ही परमेश्वर ने उन्हें चेतावनी दे दी थी कि पाप से उन पर शारीरिक और आत्मिक दोनों प्रकार की मृत्यु आएगी। "तब यहोवा परमेश्वर ने आदम को यह आज्ञा दी कि तू वाटिका के सब वृक्षों का फल बिना खटके खा सकता है, पर भले या बुरे के ज्ञान का जो वृक्ष है, उसका फल तू कभी न खाना, क्योंकि जिस दिन तू उसका फल खाए उसी दिन अवश्य मर जाएगा" (उत्पत्ति 2:16, 17)।

परन्तु जब शैतान सर्प के भेष में बाग में आया तो उसने हव्वा से पूछा, "क्या सच है, कि परमेश्वर ने कहा कि तुम इस वाटिका के किसी वृक्ष का फल न खाना"? (उत्पत्ति 3:1ख)।

हव्वा ने उत्तर दिया, "इस वाटिका के वृक्षों के फल हम खा सकते हैं। पर जो वृक्ष वाटिका के बीच में है, उसके फल के विषय में परमेश्वर ने कहा है कि न तो तुम उसको खाना और न उसको छूना, नहीं तो मर जाओगे" (उत्पत्ति 3:2, 3)।

फिर सर्प ने कहा, "तुम निश्चय न मरोगे, वरन परमेश्वर आप जानता है कि जिस दिन उसका फल खाओगे उसी दिन तुम्हारी आंखें खुल जाएंगी, और तुम भले-बुरे का ज्ञान पाकर परमेश्वर के तुल्य हो जाओगे।"

शैतान की बातों को सुनकर हव्वा को निश्चय हो गया कि वृक्ष का फल खाने के लिए अच्छा, आंखों के लिए मनभाऊ है और उसे खाने से वह परमेश्वर के जैसी बन जाएगी। सो "... उसने उसमें से तोड़कर खाया और अपने पति को भी दिया और उसने भी खाया" (उत्पत्ति 3:3-6)।

जैसा कि 1 तीमुथियुस 2:14 में कहा गया है कि हव्वा शैतान की बातों से भरमाई गई थी। उसने वैसा ही किया, जैसा शैतान ने उसे करने के लिए उकसाया था और उसी से पाप जगत में आया।

परमेश्वर द्वारा स्त्री को उसके लिए तैयार किए गए विशेष काम को करने के लिए बनाया गया कि वह अपने पति के साथ जीवन में सहभागी हो और घरबार संभाले और अपने बच्चों की देखभाल करे (1 तीमुथियुस 5:14; तीतुस 2:4-5)। इस काम के लिए आवश्यक है कि वह भरोसे के योग्य, कोमल हृदय और अपने परिवार की भलाई के लिए चिंतित हो। परन्तु अपने परिवार की भलाई की सब बातों

पर (अपनी सोच से) स्त्री के विचार में, उसके लिए गलत निर्णय लिया जाना या दूसरे के साथ गलत व्यवहार किया जाना भी संभव है।

पुरुषों और स्त्रियों की भूमिका के संबंध में मियर क्रिश्चियनिटी नामक अपनी पुस्तक में सी.एस. लुईस ने बहुत अच्छी बात बताई है :

"सिर का होना अगर आवश्यक है, तो पुरुष ही क्यों सिर हो? पहली बात तो यह है कि क्या कोई बहुत गंभीर इच्छा है कि सिर स्त्री ही होनी चाहिए? जहां तक मुझे समझ आती है, कोई स्त्री जो अपने घर का सिर (मुखिया) होना चाहती है, आमतौर पर इसी बात को पड़ोस के घर में पाकर उसकी सराहना नहीं करती। अधिक संभावना तो यही है कि पड़ोस में ऐसा होने पर वह कहेगी, ''बेचारा....। समझ में नहीं आता कि उसने उस चुड़ेल को इतना सिर पर क्यों चढ़ा रखा है?'' मुझे नहीं लगता कि अगर उसके विभाग में उसके अपने 'सिर' बनने की बात लाई जाएं तो वह इसे मानने को तैयार होगी। पतियों पर पत्नियों की हुकुमत की बात में कुछ तो गड़बड़ है। क्योंकि पत्नियां स्वयं इस पर थोड़ा शर्मिंदा होती और पतियों को तुच्छ जानती हैं, जिनके ऊपर वे हुकुम चलाती है।

"परन्तु एक और कारण है; और यहां मैं बिल्कुल एक अविवाहित व्यक्ति के रूप में बात करता हूं, क्योंकि यह एक तरीका है जिससे आपको भीतर के बजाय बाहर से, यानी कहीं बेहतर दिखाई दे सकता है। बाहरी संसार के साथ परिवार के संबंध, जिन्हें परिवार की विदेश नीति कहा जा सकता है, अंतिम आश्रय अर्थात् पुरुष पर निर्भर होना चाहिए, क्योंकि बाहर वालों के साथ उसे कहीं अधिक निष्पक्ष होना चाहिए, और वह होता भी है। स्त्री आमतौर पर संसार के साथ अपने बच्चों और पति के लिए लड़ती-झगड़ती रहती है। एक अर्थ में स्वाभाविक है कि उसके लिए अन्य सभी दावों से बढ़कर उनके दावे अधिक महत्वपूर्ण हैं, जो कि सही भी है। उसे उनकी रुचियों की देखभाल करनी है। पति का काम यह देखना है कि उसकी यह स्वाभाविक प्राथमिकता कहीं सिर न चढ़ जाए। पत्नी की अत्यधिक परिवार-भक्ति से अन्य लोगों का बचाव करने के लिए पति को ही निर्णय लेना पड़ता है।

"किसी को अगर इस पर कोई शक है तो मैं एक सीधा-सा सवाल पूछता हूं। यदि आपके कुत्ते ने पड़ोसी के बच्चे को काट दिया हो, या आपके बच्चे को पड़ोसी के कुत्ते ने काट दिया हो तो आप उस घर के मालिक से बात करने जाएंगे या मालकिन से? यदि आप विवाहित स्त्री हैं तो मैं आप से एक प्रश्न पूछता हूं। आप अपने पति की जितनी प्रशंसा करती हैं, क्या आप यह नहीं कहेंगी कि उसकी मुख्य असफलता यह है कि वह पड़ोसियों के विरूद्ध अपने और आपके अधिकारों के लिए उतने जोश से नहीं लड़ता, जितना कि आप चाहती हैं? थोड़ा-सा सुकून देता है न?"

अपने स्वभाव की इन्हीं विशेषताओं के कारण परमेश्वर की आज्ञा मानने की आवश्यकता से बढ़कर, जो उसे लगा कि उसके परिवार के लिए अच्छी पसंद है, हव्वा ने शैतान की बात सुनी होगी। उसका तर्क गलत था और उसके आज्ञा तोड़ने के कारण पूरी मनुष्य जाति पर विनाश आया।

इस दु:खद कहानी में हम स्त्री के, अपने पति से लीडरशिप की भूमिका अपने

हाथ में ले लेने और उसके पति द्वारा उसे ऐसा करने देने का पहला मामला देखते हैं। ऐसा कोई संकेत नहीं है कि फल खाने के लिए हव्वा आदम के पास उसका विचार जानने और उससे सलाह लेने के लिए गई हो। ऐसा भी कोई संकेत नहीं है कि आदम ने उसे रोकने की कोई कोशिश की हो, चाहे उसे अच्छी तरह से मालूम था कि परमेश्वर ने क्या कहा था, और चाहे वचन कहता है कि वह हव्वा के साथ था। कितने दुख की बात हैं कि परिवार के लिए लीडरशिप की परमेश्वर की योजना को बदल देना बड़े अपराध और मनुष्य जाति के पाप में गिरने का कारण बना।

---

# नई वाचा

## (इब्रानियों 8:6-13)

## डेविड रोपर

हम में से अधिकतर लोग जानते हैं कि, "पुराना नियम" और "नया नियम" दोनों शब्दों में पुराना नियम यहूदियों के लिए था, जबकि नया नियम मसीही लोगों के लिए, परन्तु इन नियमों के बारे में कुछ लोग केवल इतना ही जानते हैं। परन्तु अनुवादित शब्द "नियम" (और कई बार "वांचा") की सुन्दर अवधारणाएं ऐसी अवधारणाएं हैं जिनसे हमें चूकना नहीं चाहिए। अध्याय 8 के अंतिम भाग में इब्रानियों के लेखक से नये नियम अर्थात् नई वाचा की बात की।

### एक नई वाचा

**यह एक वाचा है:** शायद हमें पहले "वाचा" शब्द पर जोर देना चाहिए। "वाचा" और कईबार "नियम" किया गया है। दोनों शब्द एक ही यूनानी शब्द से अनुवाद किए गए हैं, जिस कारण "वाचा" शायद बेहतर अनुवाद है। बाइबल में "पुराना नियम" और "नया नियम" के बजाय "पुरानी वाचा" और "नई वाचा" (इब्रानियों 8:13, देखें 8:8, 9:11, 12:24) या "पहली वाचा" और दूसरी वाचा" (8:7; देखें 9:1, 15, 18) जैसे वाक्यांशों का इस्तेमाल हुआ है।

इस संदर्भ में यूनानी शब्द का अनुवाद "वाचा" है "वाचा" के लिए सामान्य यूनानी शब्द नहीं है बल्कि यहां इस्तेमाल शब्द आमतौर वसीयत के लिए है। वाचा की बात करते हुए हमारे ध्यान में आमतौर पर दो पक्षों के बीच में होने वाला समझौता होता है। एक अर्थ में नई वाचा यह है कि हम परमेश्वर की इच्छा पूरी करने को सहमत होते हैं और परमेश्वर हमें आशीष देने की प्रतिज्ञा करता है। परन्तु मानवीय वाचाओं या अनुबंधों में आमतौर पर कोई समझोता किए जाने से पहले सौदेवाजी होती है। पुरानी वाचा के मामले में ऐसा नहीं था और न ही नई वाचा में ऐसा है। पुरानी वाचा की शर्तों में इस्राएलियों की कोई बात नहीं है और नई वाचा की शर्तों में आपकी और मेरी कोई बात नहीं है। इस संबंध में नई वाचा मसीहियत के जैसे अधिक है (देखें 9:16, 17) जिसमें वसीयत के लाभपात्र मसीहियत की शर्तों से सहमत या असहमत हो सकते हैं परन्तु वे उसे बदल नहीं सकते।

**यइ नई है:** फिर हमें मसीह के वाचा के नयेपन पर जोर देना आवश्यक है। अनुवादित शब्द "नया" का अर्थ पुराने के विपरीत (एक) अलग स्वभाव के रूप या गुण के रूप में "नया है।" नई वाचा पुरानी वाचा का सुधारा हुआ संस्करण नहीं है, बल्कि यह वाचा की एक नई किस्म है।

लेखक ने यह दिखाने के लिए कि नई वाचा परमेश्वर की योजना का भाग थी, यिर्मयाह 31:31-34 उद्धृत किया, "देखो, वे दिन आते हैं, कि मैं इस्रसाएल के घराने के साथ, यहूदा के घराने के साथ, नई वाचा बांधूगा" (8:8; देखें यिर्मयाह 31:31)। इस्राएल और यहूदा सुलैमान राजा की मृत्यु के बाद विभाजित इस्राएल दो के दो अलग राज्य बन गए थे। कइयों को लगता है कि मूल में यिर्मयाह वाली प्रतिज्ञा यहूदियों के हृदय परविर्तन की बात करती है जो दासता में उनके ले जाने से होना था। ऐसा है या नहीं पर यह एक भविष्यवाणी है जो पुराने नियम के समयों में पूर्ण रूप में पूरी नहीं हुई थी। इब्रानियों की पुस्तक के लेखक ने मसीह की नई वाचा में इसके पूर्ण और अंतिम रूप में पूरा होने के रूप में सही व्याख्या थी।

**नई वाचा की विशेषताएं:** नई वाचा की मुख्य विशेषता यह है कि यह उत्तम है 9:22)। उत्तम इसलिए क्योंकि इसमें उत्तम मध्यस्थ अर्थात् यीशु है (8:6क; देखें गलातियों 3:19), और उत्तम इसलिए है क्योंकि यह उत्तम प्रतिज्ञाओं पर बनी है (8:6)। एक और विशेषता (जैसा अभी देख गया है) कि यह नई है। हमारा वचन पाठ कुछ अतिरिक्त विशेषताओं का सुझाव भी देता है।

**एक दोषरहित वाचा:** पुरानी वाचा के विपरीत नई वाचा इस बात में दोष रहित है (8:7) कि यह लोगों को पक्के तौर पर परमेश्वर की संगति में लाती है। इसमें कोई खोट नहीं है और यह हमारी कमियों के लिए उपाय करती है।

**एक आत्मिक वाचा:** यह आत्मिक लोगों (अर्थात् कलीसिया, देखें 1 पतरस 2:9, 10) के साथ एक आत्मिक वाचा है। यिर्मयाह के लिखने के समय इस्राएल का उत्तरी राज्य अश्शूर की दासता में ले जाया गया था और यहूदा के दक्षिणी राज्य में भी थोड़ी देर बाद ही बाबुल की दासता में ले जाए जाना था। पवित्र आत्मा की प्रेरणा से एक अर्थ में इब्रानियों की पुस्तक के लेखक ने कहा कि यह भविष्यवाणी मुख्यतया यहूदा और इस्राएल के उन लोगों के लिए नहीं थी जो अंत में दासता से लौट आए थे बल्कि यह अब्राहम की आत्मिक संतान (देखें गलातियों 3:29) अर्थात् मसीही लोगों के लिए थी।

**एक भीतरी वाचा:** यह एक भीतरी वाचा है (इब्रानियों 8:10)। हृदय के धर्म की आवश्यकता पर यिर्मयाह को बहुत कुछ करना था (देखें यिर्मयाह 4:4, 14, 5:24, 24:7, 29:13)। योशिय्याह के सुधार के कारण पुरानी वाचा के कई बाहरी संस्कारों को देखा जा रहा था, परन्तु लोग अभी भी हृदय की अनदेखी कर रहे थे। नई वाचा हृदय पर लिखी जानी थी (देखें 2 कुरिन्थियों 3)।

**एक व्यक्तिगत वाचा:** यह एक व्यक्तिगत वाचा है। 8:10 के अन्त में बताई गई प्रतिज्ञा निर्गमन 34:7 में इस्राएलियों के साथ की गई और यिर्मयाह 31:31-34 में नये

सिरे से की गई प्रतिज्ञा थी। परन्तु आज्ञा न मानने के कारण कभी इस पर अमल नहीं हुआ (इब्रानियों 8:9ख)। अन्त में यह पूर्ण रूप में मसीहियत में लागू होनी थी (देखें प्रकाशितवाक्य 21:7)। इस वाचा के व्यक्तिगत होने पर जो इब्रानियों 8:11 के "जाना" शब्द में मिलता है, "यहां प्रभु को 'जानने' का अर्थ उसके साथ निकटतम, व्यक्तिगत संबंध का होना है।

**एक सुविज्ञ वाचा:** यह एक सुविज्ञ वाचा है (आयत 11)। यिर्मयाह परमेश्वर के लोगों की आत्मिक अज्ञानता से तंग आ गया था (देखें यिर्मयाह 3:15, 10:14, 51:17)। नई वाचा में "छोटे से लेकर बड़े तक" सब ने परमेश्वर को जानना था। यह ऐसी प्रतिज्ञा है जिसे पुराने नियम में पूरा नहीं किया जा सकता था, क्योंकि उसमें परमेश्वर के साथ वाचा के संबंध में प्रवेश करने वाले यहूदी बालक ही थे। जन्म और खतने की रीति के द्वारा वे केवल कुछ दिन के होने पर परमेश्वर के लोग बन जाते थे, परन्तु बाद में उन्हें प्रभु को जानना सिखाया जाना आवश्यक था। यह प्रतिज्ञा मसीहियत में पूरी हो सकती है, क्योंकि परमेश्वर के साथ वाचा में प्रवेश करने या न करने का निर्णय लेने से पहले व्यक्ति को इतना ज्ञान और परिपक्व होना आवश्यक है, उसे उस संबंध में प्रवेश करने से पहले सिखाया जाता है (देखें मत्ती 28:18-20, मरकुस 16:15, 16, यूहन्ना 1:12, 13, 6:44, 45)।

**एक छुटकारा दिलाने वाली वाचा:** यह एक छुटकारा दिलाने वाली वाचा है (इब्रानियों 8:12)। पुरानी वाचा में क्षमा की बात तो थी पर यह क्षमा अस्थाई थी (10:3, 4) जो सिद्ध बलिदान की राह देखती थी (देखें 9:15)। केवल नई वाचा में ही परमेश्वर कहता है, "मैं उनके पापों को, और उनके अधर्म के कामों को फिर कभी स्मरण न करूंगा" (10:17)।

**एक बनी रहने वाली वाचा:** पुरानी वाचा के विपरीत यह एक बनी रहने वाली वाचा अर्थात् स्थिर वाचा है (8:13)। आज नई वाचा वास्तव में इब्रानियों की पुस्तक के लिखे जाने के समय की पुरानी वाचा से पुरानी है। यह बहुत देर से, पर आज भी यह नहीं है। यह आज और कल प्रभु के अपने तक के लिए परमेश्वर की अद्भुत नहीं वाचा है।

**आप के लिए एक वाचा:** मत्ती से प्रकाशितवाक्य की पुस्तकों को हम नया नियम या नई वाचा का नाम देते हैं। परन्तु हमें यह समझने की आवश्यकता है कि जब तक हम इसकी शर्तों को मानते और प्रभु के साथ वाचा के संबंध में प्रवेश नहीं करते हैं तब तक वास्तव में यह हमारे लिए नई वाचा नहीं है। 2 कुरिन्थियों 3 में पौलुस की शब्दावली का इस्तेमाल करें तो हम कह सकते हैं कि जब तक यह केवल कागज के टुकड़े पर छपे शब्द हैं तब तक यह वाचा नहीं है, वाचा यह तभी बनती है जब यह हमारे हृदयों पर लिखी जाती है (देखें आयत 3)।

आमतौर पर सबक इस प्रश्न के साथ समाप्त होते हैं कि "क्या आप मसीही हैं?" मैं इस पाठ को थोड़ा अगले प्रश्न के साथ समाप्त करना चाहता हूं, "क्या आप परमेश्वर के साथ वाचा के संबंध में हैं? "परमेश्वर आपको आशीष देना चाहता है, पर उसकी शर्तों को स्वीकार करना या न करना आप पर निर्भर करता है।

# यीशु में शिष्य का जीवन ( यूहन्ना 15 )

## एँडी क्लोर

"सच्ची दाखलता मैं हूं; और मेरा पिता किसान है। जो डाली मुझ में हैं, और नहीं फलती, उसे वह काट डालता है, और जो फलती है, उसे छांटता है ताकि और फले। तुम तो उस वचन के कारण जो मैं ने तुम से कहा है, शुद्ध हो। तुम मुझ में बने रहो, और मैं तुम मैं, जैसे डाली यदि दाखलता में बनी न रहे, तो अपने आप से नहीं फल सकती, वैसे ही तुम भी यदि मुझ में बने न रहो तो नहीं फल सकते। मैं दाखलता हूं, तुम डालियां हो; जो मुझ में बना रहता है, और मैं उसमें, वह बहुत फल फलता है, क्योंकि मुझ से अलग होकर तुम कुछ नहीं कर सकते। यदि कोई मुझ में बना रहे, तो वह डाली की नाई फेंक दिया जाता, और सूख जाता है; और लोग उन्हें बटोरकर आग में झोंक देते हैं, और वे जल जाती है" (आयतें 1-6)।

अपने जाने से पहिले प्रेरितों को तैयार करते हुए यीशु ने उन्हें बताया कि उसकी अनुपस्थिति में आत्मिक जीवन को कैसे बनाए रखा जा सकता है। उसने दाखलता और इसकी टहनियों के रूपक का इस्तेमाल करते हुए यह निर्णायक सच्चाई बताई। उसने अपने पिता को किसान या माली के रूप में, अपने आपको दाखलता के रूप में और प्रत्येक चेले को दाखलता से जुड़ी टहनी के रूप में दिखाया। इस रूपक में पाया जाने वाला मुख्य विचार जीवनदायक संबंध है जो अन्य किसी भी संबंध से बढ़कर है। यह पिता, पुत्र और चेले का त्रिपक्षीय संबंध है।

हमारे लिए यीशु के शब्दों को समझना उतना ही आवश्यक है जितना प्रेरितों के लिए उन्हें समझना आवश्यक था। यीशु बता रहा था कि उसके पिता के दाहिने हाथ बैठ जाने के बाद इस संसार में आत्मिक जीवन कैसा हो सकता था। प्रेरितों के पास यीशु की व्यक्तिगत उपस्थिति नहीं होनी थी, पर वे जीवन रक्षक ढंग से उसके साथ जुड़े होने थे। आज मसीह के लिए जीते हुए हमें उसमें और उसके द्वारा रहना आवश्यक है जैसे टहनी दाखलता में और उसके द्वारा जीवित होती है।

**आवश्यक संबंध:** यह संबंध जो चेले का यीशु के साथ है बड़ा ही आवश्यक है। यीशु ने अपने आपको दाखलता बताया और घोषणा की कि जब तक हम उससे जीवन पाने के लिए दाखलता की टहनी की तरह उससे जुड़ते नहीं है तब तक हम किसी प्रकार का आत्मिक जीवन नहीं पा सकते। उसने कहा, "सच्ची दाखलता मैं हूं और मेरा पिता किसान है" (15:1)। बाद में उसने कहा, "यदि कोई मुझ में बना रहे, तो वह डाली की नाई फेंक दिया जाता, और सूख जाता है; और लोग उन्हें बटोरकर आग में झोंक देते हैं, और वे जल जाती हैं" (15:6)।

इस रूपक को ध्यान में रखते हुए, मसीही जीवन का आरंभ तब होता है जब व्यक्ति सच्ची दाखलता की टहनी बन जाता है यानी वह मसीही बन जाता है। उद्धार प्राप्त करने के लिए इस प्रकार से विश्वास करना, मन फिराव, अंगीकार और बपतिस्मा शामिल हैं कि हम उस दाखलता के भाग बन जाते हैं। एक अलग आकृति का इस्तेमाल करते हुए पौलुस ने कहा, "और तुम में से जितनों ने मसीह में बपतिस्मा

लिया है, उन्होंने मसीह को पहन लिया है" (गलातियों 3:27)। उसने कहा कि बपतिस्मे के संग हम मसीह में प्रवेश करते और उसके साथ लपेटे जाते या पहनाए जाते है। दाखलता की टहनियों की तरह, मसीह में बने रहने ओर उससे जीवन पाने में हमें मसीह के साथ एक नया जीवन मिलता है जो बढ़ता, फूलता और फलता है। हम मसीह के साथ एक नई एकता में प्रवेश करते और उस एकता में बने रहते हैं। कोई टहनी दाखलता से अलग रहकर जीवित नहीं रह सकती, और न ही मसीही जीवन मसीह से अलग रहकर हो सकता है।

**बना रहने वाला सम्बंध:** यीशु के साथ हमारा संबंध एक बना रहने वाला सम्बंध है। यीशु ने कहा, "मैं दाखलता हूं; तुम डालियां हो; जो मुझ में बना रहता है, और मैं उसमें, वह बहुत फल फलता है, क्योंकि मुझ से अलग होकर हुम कुछ नहीं कर सकते" (15:5)। यहां इस्तेमाल शब्द "बना" निरन्तरता को दिखाता है। इसके साथ हमारा यह संबंध पक्का, प्रतिदिन का और बढ़ता रहने वाला है।

खाना खाए बिना व्यक्ति मर जाएगा यदि डॉक्टर उसे नली के द्वारा खाना खिलाकर जीवित न रखे। खाने के बिना कोई व्यक्ति जीवित नहीं रह सकता और मसीह की ईश्वरीय ऊर्जा के बिना कोई मसीही जीवित नहीं रह सकता। यीशु के साथ हमारा संबंध यीशु के साथ हमारे बातें करने, यीशु के द्वारा प्रार्थना करने, यीशु के वचन को खाने और उसकी समानता में बनने से बना रहता है।

**उपजाऊ संबंध:** हमारे अन्दर मसीह का जीवन होने का अर्थ है कि उसके साथ हमारा संबंध उपजाऊ होगा। यीशु ने कहा, "तुम मुझ में बने रहो, और मैं तुम मैं। जैसे डाली यदि दाखलता में बनी न रहे, तो अपने आप से नहीं फल सकती, वैसे ही तुम भी यदि मुझ में बने न रहो तो नहीं फल सकते" (15:4)। हमारे अन्दर इस ईश्वरीय ऊर्जा के जाने से हमें इसका कुछ करना आवश्यक है। या तो हम इसे मानकर इसे हमारे अन्दर वह उपजाने देंगे जो मसीह का जीवन उपजाता हैं अर्थात आत्मिक जीवन, उसकी समानता में बढ़ना, उसके जैसा प्रेम और उसकी तरह सेवा करने की लगन नहीं तो हम आत्मिक रूप में मर जाते हैं।

यीशु ने यह भी कहा; "जो डाली मुझ में है, और नहीं फलती, उसे वह काट डालता है, और जो फलती हैं, उसे छांटता है ताकि और फले" (15:2)। हो सकता है कि हम दाखलता से जुड़ने पर भी उस आत्मिक जीवन का जो हमें दाखलता से मिलता है सही उपयोग न करें। हम इसे वैसे ही छुपा सकते हैं जैसे हम आत्मा को बुझा सकते हैं जो वचन के द्वारा हमारी अगुआई करता है।

अपने आपको उसके रूप में अधिक से अधिक डालते हुए जब हम मसीह की ईश्वरीय ऊर्जा को मान लेते और इसे अपने अन्दर काम करने देते हैं तो हमें पिता की ओर से प्रोत्साहन मिलता है ताकि हम और तेजी से बढ़ सकें। कई बार वह हमें जांचता है ताकि पुत्र का जीवन हम में और भरपूरी के साथ फैल जाए। कई बार वह हमें छाटता है। प्रेरितों को हाल ही में यीशु की प्रेरणा के द्वारा छांटा गया था। उसने उन्हें बताया कि "तुम उस वचन के कारण जो मैंने तुम से कहा है, शुद्ध हो" (15:3)। इसी प्रकार से हमारा पिता वचन के द्वारा हमारी छटाई करके हमारे मनों में और तेज धार वाली सामर्थ देकर हमारे मनों को नया बनाने का काम करता है।